

## **Santan Gopal Mantra in Hindi & Sanskrit**

॥ संतान गोपाल मंत्र ॥

**Sumit Girdharwal**

9540674788, 9410030994  
sumitgirdharwal@yahoo.com  
[www.baglamukhi.info](http://www.baglamukhi.info)  
[www.yogeshwaranand.org](http://www.yogeshwaranand.org)



सामान्यतः विवाहोपरान्त नवदम्पती को संतान की प्राप्ति स्वाभाविक है, परन्तु प्रारब्धवशात् कभी कभी किसी व्यक्ति को ग्रहबाधा के कारण संतान नहीं होती तो पुत्र प्राप्ति के लिए वह व्यक्ति औषध उपचार के साथ देवाराधन-अनुष्ठान तथा हरिवंशपुराण के श्रवण आदि का सहारा लेता

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji  
9540674788, 9917325788  
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com  
[www.baglamukhi.net](http://www.baglamukhi.net), [www.yogeshwaranand.org](http://www.yogeshwaranand.org)

है, यद्यपि प्रबल प्रारब्ध को मिटाने में कठिनाई होती है, परंतु अधिकतर लोगों को सफलता मिलती है।

हिन्दु शास्त्र संतानप्राप्ति के लिए मंत्रानुष्ठान बताते हैं, इन्हें सावधानीपूर्वक करने से सफलता प्राप्त होती है संतान-प्राप्ति की कुछ शास्त्रोक्त विधियां यहां प्रस्तुत की जा रही हैं तथा सनत्कुमारसंहिता के आधार पर संतानगोपाल के मंत्र का जाप तथा उसकी विधि प्रस्तुत है।

### संतान गोपाल मंत्र विधि

स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध आसन पर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर शिखाबन्धन, आचमन, प्राणायाम आदि करके निम्नलिखित मंत्र से भगवान् गणेश जी का स्मरण करना चाहिये -

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम् ।

उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥

तदनन्तर निम्न संक्लप करना चाहिये -

ओम् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ओम् तत्सत् अद्यैतस्य  
 अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सूष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य  
 परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे  
 वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके  
 जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावैतैक देशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे  
 स्थाने .....संवत्सरे.....अयने .....  
 .....ऋतौ.....मासे.....  
 पक्षे.....तिथौ.....वासरे.....  
 .एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ.....गोत्रः..  
 ...अहम् अस्यामेव जन्मनि अस्यामेव पाणिग्रहीत्यां धर्मपत्न्यां  
 भगवद्भक्तस्य सदाचारनिष्ठस्य सनातनधर्मनिरतस्य चिरंजीविनः  
 वंशप्रवर्तकस्य स्वात्मजस्योत्पत्तयर्थं वंशानुवृद्ध्यर्थं  
 सन्ततिप्रतिबन्धकग्रहजन्यदोषनिवृतिपूर्वकं श्री राधामाधव प्रीत्यर्थं च  
 सन्तानगोपालमंत्रस्य जपं करिष्ये ।

**विनियोग :-** अस्य श्री सन्तानगोपाल मंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः , अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः , पुत्रार्थे जपे विनियोगः ।

**अंगन्यास :-**

**देवकीसुत गोविन्द हृदयाय नमः** - इस वाक्य को बोलकर दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका और तर्जनी अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करे ।

**वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा** - इस वाक्य को बोलकर सिर का स्पर्श करे

**देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्** - इस वाक्य को बोलकर दाहिने हाथ के अंगूठे से शिखा का स्पर्श करें

**त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्** - इस वाक्य को बोलकर दाहिने हाथ की पांचों अंगुलियों से बार्यीं भुजा का और बायें हाथ की पांचों अंगुलियों से दाहिनी भुजा का स्पर्श करे

**ओम् नमः अस्त्राय फट्** - इस वाक्य को बोलकर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बार्यीं और से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर तीन बार चुटकी बजाते हुए ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजायें ।

इसके पश्चात् निम्नाकिंत रूप से भगवान् कृष्ण का ध्यान करें -

वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम् ।

किरीटिसारथिं पुत्रमानयन्तं परात्परम् ॥

आदाय तं जलस्थं च गुरवे वैदिकाय च ।

अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम् ॥

‘पार्थसारथि अच्युत भगवान् श्रीकृष्ण करुणा के सागर हैं वे जल में डूबे हुए गुरु-पुत्र को लेकर आ रहे हैं वे वैकुण्ठसे अभी-अभी पधारे हैं और रथ पर विराजमान हैं अपने वैदिक गुरु सांदीपनिको उनका पुत्र अर्पित कर रहे हैं - साधक पुत्र की प्राप्ति के लिये इस रूप में महाभाग भगवान् श्री कृष्ण का चिन्तन करे ।’

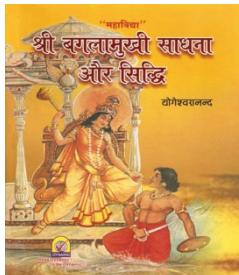
### मूल मंत्र

‘ॐ श्रीं ह्रीं कर्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं गतः॥’

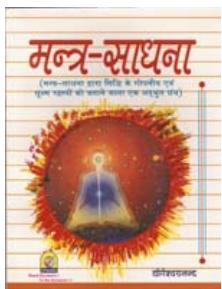
यह सम्पूर्ण मंत्र है। इसका कम से कम तीन लाख जप करना चाहिये। इस मंत्र का भावार्थ इस प्रकार है - सच्चिदानन्दस्वरूप, ऐश्वर्यशाली, शक्तिशाली, कामनापूरक, सौम्यस्वरूप, देवकीनन्दन!, गोविन्द!, वासुदेव!, जगत्पते!, श्रीकृष्ण!, मैं आपकी शरण में आया हूँ, आप मुझे पुत्र प्रदान कीजिये ।

## Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

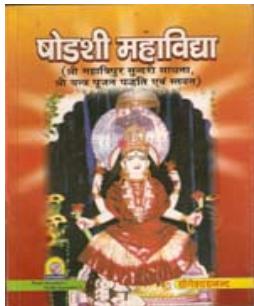
### 1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi



### 2. Mantra Sadhana



### 3. Shodashi Mahavidya (Tripursundari Sadhana)



### 4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C

Sumit Girdharwal

Axis Bank

912020029471298

IFSC Code – UTIB0001094

After payment send your complete address and payment receipt to [shaktisadhna@yahoo.com](mailto:shaktisadhna@yahoo.com) & [sumitgirdharwal@yahoo.com](mailto:sumitgirdharwal@yahoo.com). For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

### Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

## **Requirement**

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at [sumitgirdharwal@yahoo.com](mailto:sumitgirdharwal@yahoo.com) Thanks